

गायत्री तत्त्व विवेचन

त्रिपदागायत्री के उपासक ब्राह्मणसंतान महासविता को प्राप्त होते हैं। इस प्राप्ति में क्रम नहीं है। परन्तु ब्राह्मणदेह न होने पर क्रम आवश्यक हो सकता है। जन्म फिर लेना ही होगा, ऐसी कोई बात नहीं है क्योंकि ऊर्ध्वलोक से भी देह क्रमशः शुद्ध होते-होते ब्रह्मदेह लाभ हो सकता है। यदि किसी को महानिर्वाणमार्ग में चलने की योग्यता हो, तो ऊर्ध्वलोक में ही उसे चतुर्थपाद का रहस्यज्ञान मिलता है। यदि दिव्य और दिव्यातीत लोकों में साम्राज्य, वैराज्य, अधिराज्य और स्वाराज्यलाभ की योग्यता हो तो त्रिपदादेवी ही उसको दे सकती हैं। यदि परमपद प्राप्य हो तो वह भी आयत्त हो सकता है। गायत्री ब्रह्मविद्या स्वरूपा है। ब्रह्मविद्या के सूक्ष्मातिसूक्ष्म बहुत क्रम हैं परन्तु उन सबको जानने की आवश्यकता नहीं होती। गायत्री की पूर्ण प्रसन्नता होने पर कोई वस्तु शेष नहीं रहती। जो ब्रह्मविद्या की परावस्था है वह भी अनधिगत नहीं रहती। एकमात्र गायत्री से हो सब कुछ हो सकता है। महासंन्यास और महाज्ञानादि उपासक के निकट समय आने पर ही आविर्भूत होते हैं।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

प्राचीन दृष्ट्यानुसार ब्राह्मण वर्गों में श्रेष्ठ है और संन्यास आश्रमों में। परन्तु अंतिम अवस्था में दोनों ही अतिक्रान्त हो जाते हैं, अवश्य दोनों का चरमोत्कर्ष सिद्ध हो जाने के बाद। एक विशिष्ट बात कह रहे हैं। गायत्री वेदमाता व छंद-जननी है, समस्त वेद और छंद का मूल है। गायत्री वेदमय है। देवताओं ने मृत्युभय से भीत होकर छंद का आश्रय लिया था। छन्दों की प्रसूति और शुद्धतम स्वरूप ही गायत्री है। अतएव गायत्री को आश्रय करने से ही दिव्यदेह और द्वितीयजन्मलाभ हो जाता है। यह जन्म शुद्धदेह प्राप्ति का नामांतर है। इसको विद्याजन्म कहते हैं। अतएव गायत्री संस्कार-विशिष्ट-ब्रह्मण-देह वस्तुतः बँदव देह है। वेद का सिद्धांत यह है-गायत्री छंद से ब्राह्मण का देह उत्पन्न हुआ है-यह स्मरण रखना होगा अर्थात् जो देह गायत्री से उत्पन्न हुआ है और जो गायत्री छंद से शोधित हुआ है, वही शब्दब्रह्म का अनुशीलन करने के लिए उपयोगी है। शब्दब्रह्म का अनुशीलन ही वेदानुशीलन का नामांतर है। स्वाध्याय प्रभृति वैदिक कर्म इसी के अंतर्गत हैं। कर्मकांड के अनंतर ज्ञानकांड का अनुशीलन भी वेद का ही अनुशीलन है। इतना उत्कर्षलाभ हो जाने पर तपस्या और ब्रह्मविद्या का चरमविकास संपन्न होता है। उस समय समना भेद होकर बिन्दुराज्य का लंघन हो जाता है। यही महासंन्यासावस्था है।

इसके बाद परमशुद्ध आत्मस्वरूप में, चिन्मात्र रूप में या

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

नित्यचिदानंदस्वरूप में स्थिति अथवा भगवद्भाव-उद्धोध, दोनों ही हो सकता है। इस स्थान में एक महा-कारण का खेल है। उसी के अनुसार गति का वैशिष्ट्य नियंत्रित होता है। वस्तुतः इस महाकारण के खेल में काल अथवा क्रम में से किसी की अपेक्षा नहीं है। उसमें अघटन भी घट सकता है। असंभव भी संभव हो सकता है। इसकी विश्लेषण-चेष्टा जीव के लिए अनधिकारचर्चा मात्र है।